अध्याय -6 | भारत के संदर्भ में नियोजन और सतपोषणीय विकास

Worksheet-1

Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan

बहुविकल्पी प्रश्न

1. इंदिरा गांधी नहर का उद्गम हरिके बाँध निम्न में से किस राज्य में है?

(अ) पंजाब में
(ब) राजस्थान में
(स) हरियाणा में
(द) हिमाचल प्रदेश में

2. प्रदेशीय नियोजन का संबंध है-

(अ) आर्थिक व्यवस्था के विभिन्न सेक्टरों का विकास
(ब) परिवहन जल तंत्र में क्षेत्रीय अंतर
(स) क्षेत्र विशेष के विकास का उपागम
(द) ग्रामीण क्षेत्रों का विकास

3. भरमौर जनजातीय क्षेत्र देश के किस राज्य में स्थित है?

(अ) हिमाचल प्रदेश में
(ब) जम्मू और कश्मीर में
(स) अरुणाचल प्रदेश में
(द) उत्तराखंड में

4. निम्न में से किस पंचवर्षीय योजना में 15 जिलों में पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम प्रारंभ किया गया?

(अ) प्रथम
(ब) तृतीय
(स) पंचम
(द) चतुर्थ

5. 1978 में प्रकाशित पुस्तक 'दी पॉपुलेशन बम' के लेखक कौन है?

(अ) एहरलिच
(ब) गरो हरलेम
(स) मीडोस
(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

6. भरमौर क्षेत्र को कब अधिसूचित जनजातीय क्षेत्र घोषित किया गया?

(अ) वर्ष 1975
(ब) वर्ष 1994
(स) वर्ष 1964
(द) वर्ष 1984

7. इंदिरा गांधी नहर तंत्र की कुल नियोजित लंबाई निम्न में से कितनी है?

(अ) 9000 कि०मी०
(ब) 9500 कि०मी०
(स) 9600 कि०मी०
(द) 9060 कि०मी०

8. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में सतत पोषणीय विकास के लिए इनमें से कौन-सा सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं?

(अ) भूमि उपनिवेशन
(ब) पारितंत्र विकास
(स) परिवहन विकास
(द) कृषि विकास

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

9. **जनजातीय समन्वित विकास उपयोजना लागू होने से भरमौर में निम्न में से कौन-सा सामाजिक लाभ नहीं मिला है?**

(अ) नगरीकरण तेजी से हुआ है। (ब) साक्षरता दर में तेजी से वृद्धि हुई है।

(स) लिंगानुपात में सुधार हुआ है। (द) बाल-विवाह में कमी आई है।

10. **ब्रंटलैंड आयोग का संबंध निम्न में से किससे है?**

(अ) मानव विकास से (ब) शिक्षा से

(स) सतत पोषणीय विकास से (द) पर्यावरण संरक्षण से

रिक्त स्थान

11. भारत में _____ नियोजन का अर्थ है: विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों जैसे कृषि, उद्योग, परिवहन आदि का योजनाबद्ध विकास।

12. नीति आयोग का गठन _____ को किया गया था।

सत्य/असत्य

13. भारत में सभी क्षेत्रों का आर्थिक विकास एकसमान हुआ है।

14. योजना आयोग का स्थान 1 जनवरी 2015 को नीति आयोग ने लिया।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

15. खंडीय नियोजन से क्या आशय है?

16. भारत में पर्वतीय क्षेत्र विकास योजना की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

17. तृतीय पंचवर्षीय योजना के बाद तीन वार्षिक योजनाओं के प्रमुख लक्षण क्या थे?

18. पिछड़े क्षेत्रों के विकास के लिए किस प्रकार के कार्यों का निर्धारण करना चाहिए?

निबंधात्मक प्रश्न

19. भरमौर जनजातीय क्षेत्र की भौगोलिक अवस्थिति, जलवायु, अर्थव्यवस्था एवं जनसंख्या की व्याख्या कीजिए।

20. इंदिरा गाँधी नहर कमान क्षेत्र में सतत पोषणीय विकास को बढ़ावा देने के लिए उपाय सुझाएँ।

HOTS

21. इंदिरा गाँधी नहर कमान क्षेत्र में सतत पोषणीय विकास को बढ़ावा देने के लिए उपाय सुझाएँ।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहां चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan

1. **(अ)**
इंदिरा गांधी नहर का उद्गम हरिके बाँध पंजाब में है।
2. **(स)** क्षेत्र विशेष के विकास का उपागम
3. **(अ)**
देश के हिमाचल प्रदेश में भरमौर जनजातीय क्षेत्र स्थित है।
4. **(स)** पंचम
5. **(अ)**
1978 में प्रकाशित दी पॉपुलेशन बम पुस्तक के लेखक एहरलिच है।
6. **(अ)** वर्ष 1975
7. **(द)**
इंदिरा गांधी नहर तंत्र की कुल नियोजित लंबाई 9060 कि०मी० है।
8. **(द)** कृषि विकास
9. **(अ)**
जनजातीय समन्वित विकास उपयोजना लागू होने से भरमौर में सामाजिक लाभ नहीं मिला है अपितु नगरीकरण तेजी से हुआ है।
10. **(स)**
इस आयोग का संबंध सतत पोषणीय विकास से है।
11. क्षेत्रीय (Sectoral)
12. 1 जनवरी 2015
13. असत्य
14. सत्य
15. अर्थव्यवस्था के विभिन्न सेक्टरों, जैसे- कृषि, सिंचाई, विनिर्माण, ऊर्जा निर्माण, परिवहन एवं संचार, सामाजिक अवसंरचना और सेवाओं के विकास के लिए कार्यक्रम बनाना तथा उन्हें लागू करना खंडीय नियोजन कहलाता है।
16. भारत में पर्वतीय क्षेत्र विकास योजना की प्रमुख विशेषताएँ हैं:
    i. **समग्र विकास:** आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को प्रोत्साहित करना।
    ii. **स्थायी कृषि:** जैविक खेती और संसाधनों का सतत उपयोग।
    iii. **बुनियादी ढाँचा :** सड़क, संचार और स्वास्थ्य सेवाओं का सुधार।
    iv. **महिला सशक्तिकरण:** महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा।
    v. **पारिस्थितिकी संरक्षण:** पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण।
17. तृतीय पंचवर्षीय योजना 31 मार्च, 1966 को समाप्त हो गई थी। तदानुसार चतुर्थ योजना को 1 अप्रैल, 1966 से आरंभ होना चाहिए था, किंतु तृतीय योजना की दुर्भाग्यपूर्ण असफलता के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन लगभग स्थिर हो गया था। अतः वर्ष 1966 से 1969 के लिए तीन वार्षिक योजनाएँ बनाई गई। इन योजनाओं के लक्षण निम्नलिखित थे
    i. गहन कृषि कार्यक्रम तैयार किए गए।
    ii. वर्षा और सिंचाई वाले क्षेत्रों में अधिक उपज देने वाले बीजों, उर्वरक, कीटनाशक और ऋण संबंधी सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं।

मिशन ज्ञान
पढ़ः जब चाहें, जहाँ चाहें जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

18. पिछड़े क्षेत्रों के विकास के लिए निम्नलिखित प्रकार के कार्यों का निर्धारण करना चाहिए:

i. **बुनियादी ढाँचे का विकास:** सड़क, परिवहन, पानी और बिजली जैसी बुनियादी सुविधाओं का निर्माण और सुधार।

ii. **शिक्षा सुधार:** स्कूलों और उच्च शिक्षा संस्थानों की स्थापना, शिक्षकों का प्रशिक्षण और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार।

iii. **स्वास्थ्य सेवाएँ:** अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों का विकास, चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता और स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम।

iv. **आर्थित विकास:** कृषि, पशुपालन और स्थानीय उद्योगों को प्रोत्साहित करना, जिससे स्थानीय रोजगार के अवसर बढ़ें।

v. **महिला सशक्तिकरण:** महिलाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, रोजगार के अवसर और सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ।

vi. **जल संरक्षण और प्रबंधन:** जल संचयन, सिंचाई सुविधाएँ और जल गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम।

vii. **पर्यावरण संरक्षण:** वनों का संरक्षण, जैव विविधता को बनाए रखना और प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग।

viii. **समुदाय की भागीदारी:** स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देना, जिससे विकास योजनाएँ उनके अनुसार बनें और लागू हों।

19. **भौगोलिक अवस्थिति**

भरमौर, हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले में स्थित है। यह क्षेत्र समुद्र तल से लगभग 2,150 मीटर की ऊँचाई पर है और इसे हरे-भरे पहाड़ी क्षेत्रों और बर्फीली चोटियों से घेर रखा है। भरमौर की भौगोलिक स्थिति इसे प्राकृतिक सौंदर्य का केंद्र बनाती है, साथ ही यह धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों के लिए भी प्रसिद्ध है।

जलवायु : भरमौर में जलवायु मुख्यतः पर्वतीय होती है। यहाँ का मौसम गर्मियों में सुखद और सर्दियों में ठंडा होता है। गर्मियों में तापमान 15 से 25 डिग्री सेल्सियस के बीच होता है, जबकि सर्दियों में यह 0 से 5 डिग्री सेल्सियस तक गिर सकता है। यहाँ वर्षा मुख्यतः मानसून के दौरान होती है, जिससे कृषि के लिए जल स्रोत उपलब्ध होते हैं।

अर्थव्यवस्था : भरमौर की अर्थव्यवस्था कृषि और पशुपालन पर निर्भर है। यहाँ के लोग मुख्यतः गेहूं, मक्का, जौ और सब्जियाँ उगाते हैं। इसके अतिरिक्त, स्थानीय हस्तशिल्प, बुनाई और पर्यटन भी महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधियाँ हैं। भरमौर में पर्यटन ने हाल के वर्षों में विकास किया है, जिससे स्थानीय व्यवसाय को बढ़ावा मिला है।

जनसंख्या : भरमौर की जनसंख्या लगभग 10,000 के आस-पास है, जिसमें अधिकांश जनसंख्या जनजातीय समुदायों की है। यहाँ के लोग मुख्यतः पश्तून और गaddi जनजातियों से संबंधित हैं। उनकी सांस्कृतिक विविधता, परंपराएँ और भाषा क्षेत्र की पहचान को समृद्ध बनाती हैं। परिवारों में आमतौर पर छोटी संख्या में सदस्य होते हैं, और स्थानीय भाषा के साथ-साथ हिंदी और अंग्रेजी भी बोली जाती है।

इन सभी पहलुओं के माध्यम से, भरमौर जनजातीय क्षेत्र की विशिष्टता और विकास को समझा जा सकता है।

20. इंदिरा गाँधी नहर, जिसे प्रारम्भ में राजस्थान नहर कहा जाता था, न केवल भारत में बल्कि विश्व के सबसे बड़े नहर तंत्रों में से एक है। 1948 ई० में कँवर सेन द्वारा संकल्पित यह नहर परियोजना 31 मार्च, 1958 ई० को प्रारंभ हुई। सतलुज एवं व्यास नदी के जल को पंजाब के हरिके नामक बाँध पर रोक कर यह नहर निकाली गई हैं, जिससे राजस्थान के थार मरुस्थल 19.63 लाख हेक्टेयर कृषियोग्य कमान क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो रही है। यह नहर लंबाई 9060 कि.मी. तंत्र की कुल है। इस नहर का निर्माण कार्य दो चरणों में पूरा किया गया है। चरण-1 के कमान क्षेत्र में सिंचाई का आरम्भ 1960 के दशक में जबकि चरण-II के कमान क्षेत्र में सिंचाई का आरंभ 1980 के दशक के मध्य में शुरूआत हुई थी।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE
VIDEO COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

इस नहर के कमान क्षेत्र में सतत पोषणीय विकास को बढ़ावा देने वाले प्रस्तावित 7 उपायों में से पाँच उपाय पारिस्थितिकीय संतुलन को पुनः स्थापित करने पर बल देते हैं, जैसे-

i. जलाक्रांत (गहन सिंचाई से जलभराव) एवं लवणता से प्रभावित भूमि का पुनरुद्धार किया जाना चाहिए।
ii. इस क्षेत्र में जल सघन फसलों को नहीं बोया जाना चाहिए बल्कि बागाती कृषि में खट्टे फलों की खेती करनी चाहिए।
iii. वृक्षों की रक्षण, वनीकरण, मेखला का विकास तथा चरागाह विकास से अलग पारितांत्र-विकास पर जोर देना चाहिए।
iv. केवल कृषि और पशुपालन के विकास से सतत पोषणीय विकास संभव नहीं है, किन्तु अर्थव्यवस्था के अन्य सेक्टरों का भी यहाँ विकास किया जाना चाहिए, जिससे कृषि सेवा केन्द्रों तथा विपणन केन्द्रों के बीच प्रकार्यात्मक संबंध बन सकें।
v. कमान क्षेत्र में नहर के जल का समान वितरण होना चाहिए तथा मार्ग में बहते जल की क्षति कम करने के उपाय किए जाने चाहिए; जैसे- भूमि विकास, नालों को पक्का करना, तथा समतलन एवं बाड़बंदी पद्धति लागू करनी आदि।
vi. इस क्षेत्र के आर्थिक रूप से कमजोर भू-आवंटियों को कृषि के लिए वित्तीय एवं संस्थागत सहायता मिलनी चाहिए।
vii. जल प्रबंधन नीति का कठोरता से कार्यान्वयन करना जिससे फसल रक्षण, सिंचाई व चरागाह विकास की व्यवस्था की जा सके।

21. पिछड़े क्षेत्रों पर राष्ट्रीय समिति का गठन विकास की असमानता को दूर करने, पिछड़े क्षेत्रों की विशिष्ट समस्याओं की पहचान करने और प्रभावी नीतियों का निर्माण करने के लिए किया गया था।

पहाड़ी क्षेत्रों में विकास के लिए समिति ने कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए, जैसे:

i. **बुनियादी ढाँचे का विकास:** सड़क और बिजली जैसी सुविधाओं में सुधार।
ii. **स्थायी कृषि प्रथाएँ:** पारिस्थितिकी के अनुकूल कृषि विधियों को अपनाना।
iii. **जल प्रबंधन:** जल संसाधनों का उचित प्रबंधन ।
iv. **सामाजिक सेवाएँ:** शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार।
v. **स्थानीय उद्योगों का प्रोत्साहन:** स्थानीय हस्तशिल्प और उद्योग को बढ़ावा देना।
vi. **पर्यटन विकास:** पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सुविधाएँ विकसित करना।

इन सुझावों से पहाड़ी क्षेत्रों का समग्र विकास सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें।
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES